© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

विश्व के भिन्न–भिन्न देशों में शान्ति की संस्कृति को बढ़ाने में जैन धर्म की भूमिका

डॉ. विकास कुमार,
असिस्टेंट प्रोफेसर, सी.आर.एम. जाट कॉलेज, हिसार

सारांश

जैन धर्म भारत की श्रद्धा परम्परा से निकला प्राचीन धर्म और दर्शन है जैन अर्थात् कर्मों का नाम करने वाले (जिन भगवान के अनुयायी) सिन्धु घाटी से मिले जैन अवशेष जैन धर्म को सबसे प्राचीन धर्म का दर्जा देते हैं संभेप्रिखर, राजगिर, पावापुरी, गिरनार, शत्रुजय, श्रवणवेलगोला आदि जैनों के प्रसिद्ध तीर्थ है दशलाक्षणी, दिवाली और रक्षाबंधन इनके मुख्य त्योहार है। अहमदाबाद महाराष्ट्रवाद महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और बंगाल आदि के अनेक जैन आजकल भारत के अग्रगण्य उद्योगपति और व्यापारियों में गिने जाते हैं। जैन धर्म का उद्धव की स्थिति अस्पष्ट है जैन ग्रंथों के अनुसार धर्म वस्तु का स्वाभाव समझाता है, इसलिए जब से सृष्टि है तब से धर्म है और जब तक सृष्टि है, तब तक धर्म रहेगा। इस धर्म को सिन्धु घाटी सभ्यता से जोड़ा गया है सिन्धु घाटी से मिले जैन शिलालेख भी जैन धर्म के सबसे प्राचीन धर्म होने की पुष्टि करते हैं।

जैन ग्रंथों के अनुसार वर्तमान में प्रचलित जैन धर्म भगवान आदिनाथ के समय से प्रचलन में आया था। यहीं से जो तीर्थकर परम्परा प्रारम्भ हुई वह भगवान महावीर तक अर्थात् वर्धमान तक चलती रही। कुछ विद्वान इसे महावीर के समय से पीछे कुछ लोग विशेषकर युरोपियन विद्वान जैन धर्म का प्रचलित होना मानते हैं।

जैन मान्यता के अनुसार जैन धर्म अनादि काल से चला आया है। अनंत काल तक चलता रहेगा। इस धर्म का प्रचार करने के लिए समय–समय पर अनेक तीर्थकरों का भाविर्भाव होता रहता है। जैन धर्म के 24 तीर्थकरों में ऋषभ प्रथम और महावीर अंतिम तीर्थकर थे।

जैन धर्म ने अपनी प्राचीन संस्कृति व शांति का संदेश पूरे विश्व में फैलाया। उन्होंने विश्व के कोने–कोने में जाकर, अनेक देशों में शांति, सहिष्णुता का संदेश दिया। वे अंहिसा को कमजोरी नहीं मानते थे। वे मानव, जीव, जानवर सभी को प्रेम की भाषा समझाते थे और परस्पर प्रेम से रहने की शिक्षा पर बल देते थे।

वरिष्ठ जैन समाजसेवी एवं श्रेष्ठि श्री त्रिलोकचंद कोठारी ने भारत एवं विदेशों में जैन धर्म के प्रचार से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत आलेख में संकलित किया है।

अमेरिका, फिनलैण्ड, सोवियत गणराज्य, चीन एवं मंगोलिया, तिब्बत, जापान, ईरान, तुर्किस्तान, इटली, एबीसिनिया, इथोपिया, अफगानिस्तान, नेपाल, पाकिस्तान आदि विभिन्न देशों में किसी न किसी रूप में वर्तमानकाल में जैनधर्म के सिद्धांतों का पालन देखा जा सकता है। उनकी संस्कृति एवं सभ्यता पर इस धर्म का प्रभाव परिलक्षित होता है। इन देशों में मध्यकाल में आवागमन के साधनों का अभाव एक–दूसरे की भाषा से अपरिचित रहने के कारण, रहन–सहन, खानपान में कुछ–कुछ भिन्नता आने के कारण हम एक–दूसरे से दूर हटते ही गये और अपने प्राचीन संबंधों को सब भूल गये।

अमेरिका में लगभग 2000 ईसापूर्व में संघपति जैन आचार्य 'काजन कोटल' के नेतृत्व में श्रवण साधु अमेरिका पहुँचे और तत्पश्चात सैंकड़ों वर्षों तक श्रमण अमेरिका में जाकर बसते रहे। अमेरिका में आज भी अनेक स्थलों पर जैन धर्म श्रमण–संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वहाँ जैन मंदिर के खण्डहर, प्रचुरता में पाये जाते हैं।

चीन में जैन धर्म

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

चीन की संस्कृति पर जैन–संस्कृति का व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। चीन में भगवान ऋषभदेव के एक पुत्र का शासन था। जैन–संघों ने चीन में अहिंसा का व्यापक प्रचार–प्रसार किया था। अति प्राचीनकाल में भी भ्रमण–सन्यासी यहाँ विहार करते थे। हिमालय क्षेत्र आविस्थान कोदिया और कैस्पियाना तक पहले ही भ्रमण–संस्कृति का प्रचार–प्रसार हो चुका था।

चीन और मंगोलिया में एक समय जैनधर्म का व्यापक प्रचार था। मंगोलिया के भूगर्भ से अनेक जैन–स्मरक निकले हैं तथा कई खण्डित जैन–मूर्तियाँ और जैन–मंदिरों के तोरण मिले हैं, जिनका आँखों देखा पुरातात्विक विवरण 'बम्बई समाचार' (गुजराती) के 4 अगस्त सन् 1934 के अंक में निकला था।

चीन के जिगरम देश ढाकुल नगर में राजा और प्रजा सब जैन–धर्मानुयायी थे। पीकिंग नगर में 'तुबाबारे' जाति के जैनियों के 300 मंदिर हैं, सब मंदिर शिखरबंद हैं। इनमें जैन–प्रतिमायें खड्गासन व पद्मानमुद्रा में विराजमान है। यहाँ जैनियों के पास जो आगम है, वे 'चीन्डी लिपि' में हैं। कोरिया में भी जैनधर्म का प्रचार रहा है। यहाँ 'सेवावारे' जाति के जैनी हैं। इस तरह चीन में जैन धर्म ने शांति का संदेश दिया।

तिब्बत और जैनधर्म

तिब्बत में जैनी 'आवरे' जाति के हैं। एरूल नगर में एक नदी के किनारे बीस हजार जैन मंदिर हैं। तिब्बत में सोहना–जाति के जैन भी हैं खिलवन नगर में 104 शिखर बंद जैन मंदिर हैं। वे सब मंदिर रत्न जटिल और मनोरम हैं। यहाँ के वनों में तीस हजार जैन मंदिर हैं। दक्षिण तिब्बत के हनुवर देश में दस–पन्द्रह कोस पर जैनियों के अनेक नगर हैं, जिनमें बहुत से जैन मंदिर हैं। हनुवर देश के राजा–प्रजा सब जैनी हैं।

यूनान और भारत में समुद्री सम्पर्क था। यूनानी लेखकों के अनुसार जब सिकन्दर भारत से यूनान लौटा था, तब तक्षशिला में एक जैन मुनि 'कोलानस' या 'कल्याण मुनि' उनके साथ यूनान गये, और अनेक वर्षों तक वे एथेन्स नगर में रहे। उन्होंने एथेन्स में सल्लेखना ली। उनका समाधि स्थान यहीं पर है। इस तरह तिब्ब्त में जैन धर्म की लोकप्रियता को बढ़ाया व शांति का प्रचार किया।

जापान में जैनधर्म

जापान में प्राचीनकाल में जैन–संस्कृति का व्यापक प्रचार था, तथा स्थान–स्थान पर श्रमण संघ स्थापित थे। उनका भारत के साथ निरंतर सम्पर्क बना रहता था। बाद में भारत से संपर्क दूर हो जाने पर इन जैन श्रमण साधुओं ने बौद्धधर्म से संबंध स्थापित कर लिया। चीन और जापान में ये लोग आज भी जैन–बौद्ध कहलाते हैं। जैन धर्म ने जापान में सहिष्णुता को बढ़ावा दिया।

मध्य एशिया जैनधर्म

मध्य एशिया और दक्षिण एशिया में लेनिनग्राड स्थित पुरातत्व संस्थान के प्रोफेसर 'यूरि जेडनेयोहस्की' ने 20 जून सन् 1969 को दिल्ली में एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि ''भारत और मध्य एशिया के बीच संबंध लगभग एक लाख वर्ष पुराना है। अतः यह स्वाभाविक है कि जैनधर्म मध्य एशिया में फैला हुआ था।''

प्रसिद्ध प्रसीसी इतिहासवेत्ता श्री जे.ए. दुबे ने लिखा है कि आक्सियाना कैस्मिया, बल्ख ओर समरकंद नगर जैनधर्म के आरंभिक केन्द्र थे। सोवियत आर्मीनिया में नेशवनी नामक प्राचीन नगर हैं। प्रोफेसर एम.एस. रामस्वामी आयंगर के अनुसार जैन मुनि संत ग्रीस, रोम, नार्वे में भी विहार करते थे। श्री जान लिंगटन आर्किटेक्ट एवं लेखक नार्वे के अनुसार नार्वे म्यूजियम में ऋषभदेव की मूर्तियाँ हैं। वे नग्न और खड्गासन हैं। तर्जिकिस्तान में सराज्य के पुरातात्विक उत्खनन में प्राप्त पंचमार्क सिक्कों तथा सीलों पर नग्न मुद्रायें बनीं हैं। जो कि सिंधु घाटी सभ्यता के सदृश हैं। हंगरी के 'बुडापेस्ट' नगर में ऋषभदेव की मूर्ति एवं भगवान महावीर की मूर्ति भूगर्भ से मिली हैं।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

ईसा से पूर्व ईराक, ईरान और फिलिस्तीन में जैन मुनि और बौद्ध भिक्षु हजारों की संख्या में चहुं ओर फैले थे, पश्चिमी एशिया, मिर, यूनान और इथियोपिया के पहाड़ों और जंगलों में उन दिनों अगणित श्रमण–साधु रहते थे, जो अपने त्याग और विद्या के लिए प्रसिद्ध थे। ये साधु नग्न थे। वानक्रेपर के अनुसार मध्य–पूर्व में प्रचलित समानिया सम्प्रदाय श्रमण का अपभ्रंश है। यूनानी लेखक मिस्त्र एचीसीनिया और इथियोपिया में दिगम्बर मुनियों का अस्तित्व बताते हैं।

प्रसिद्ध जर्मन–विद्वान वानक्रूर के अनुसार मध्य पूर्व एशिया प्रचलित समानिया सम्प्रदाय श्रमण जैन–सम्प्रदाय था। विद्वान जी.एफ. कार ने लिखा है कि ईसा की जन्मशती के पूर्व मध्य एशिया ईराक, डबरान और फिलिस्तीन, तुर्कीस्तान आदि में जैन मुनि हजारों की संख्या में फैलकर अहिंसा धर्म का प्रचार करते रहे। पश्चिमी एशिया, मिस्त्र, यूनान और इथियोपिया के जंगलों में अगणित जैन–साधु रहते थे।

मिस्त्र के दक्षिण भाग के भू–भाग को राक्षस्तान कहते हैं। इन राक्षसों को जैन–पुराणों में विद्याधर कहा गया है। ये जैन धर्म के अनुयायी थे। उस समय यह भू भाग सूडान, एबीसिनिया और इथियोपिया कहलाता था। यह सारा क्षेत्र जैनधर्म का क्षेत्र था। जैन धर्म ने मध्य एशिया में शांति स्थापना के नए आदर्श स्थापित किए।

प्राचीन काल से ही भारतीय

मिस्त्र, मध्य एशिया, यूनान आदि देशों से व्यापार करते थे, तथा अपने व्यापार के प्रसंग में वे उन देशों में जाकर बस गये थे। बोलान के अनेक जैन मंदिरों का निर्माण हुआ। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत (उच्चनगर) में भी जैनधर्म का बड़ा प्रभाव था। उच्चनगर का जैनों से अति प्राचीनकाल से संबंध चला आ रहा है तथा तक्षशिला के समान ही वह जैनों का केन्द्र–स्थल रहा है। तक्षशिला, पुण्डवर्धन, उच्चनगर आदि प्राचीन काल में बड़े ही महत्वपूर्ण नगर रहे हैं, इन अति प्राचीन नगरों में भगवान ऋषभदेव के काल से ही हजारों की संख्या में जैन परिवार आबाद थे। घोलक के वीर धवल के महामंत्री वस्तुपाल ने विक्रम सं. 1285 से 1303 तक जैनधर्म के व्यापक प्रसार के लिए योगदान किया था। इन लोगों ने भारत और बाहर के विभिन्न पर्वत शिखरों पर सुन्दर जैन मंदिरों का निर्माण कराया, और उनका जीर्णोद्धार कराया एवं सिंध (पाकिस्तान), पंजाब, मुल्तान, गांधार, कश्मीर, सिंधुसोवीर आदि जनपदों में उन्होंने जैन मंदिरों, तीर्थों आदि का नव निर्माण कराया था, कम्बोज (पामीर) जनपद में जैनधर्म पेशावर से उत्तर की ओर स्थित था। यहाँ पर जैनधर्म की महती प्रभावना और जनपद में बिहार करने वाले श्रमण–संघ कम्बोज, याकम्बेडिग गच्छ के नाम से प्रसिद्ध थे। गांधार गच्छ और कम्बोज गच्छ सातवीं शताब्दी तक विद्यमान थे। गांधार गच्छ और कम्बोज गच्छ सातवीं शताब्दी तक विद्यामान थे। तक्षशिला के उजड़ जाने के समय तक्षशिला में बहुत से जैन मंदिर और स्तूप विद्यमान थे।

अरबिया में जैनधर्म इस्लाम के फैलने पर अरबिया स्थित आदिनाथ नेमिनाथ और बाहुबली के मंदिर और अनेक मूर्तियाँ नष्ट हो गई थीं। अरबिया स्थित पोदनपुर जैनधर्म का गढ़ था, और यह वहाँ की राजधानी थी। वहाँ बाहुबली की उत्तुंग प्रतिमा विद्यमान थी।

ऋषभदेव को अरबिया में ''बाबा आदम'' कहा जाता है। मौर्य सम्राट सम्प्रति के शासनकाल में वहाँ और फारस में जैन संस्कृति का व्यापक प्रचार हुआ था, तथा वहाँ अनेक बस्तियाँ विद्यमान थी।

मक्का में इस्लाम की स्थापना के पूर्व वहाँ जैनधर्म का व्यापक प्रचार प्रसार था। वहाँ पर अनेक जैन मंदिर विद्यमान थे। इस्लाम का प्रचार होने पर जैन मूर्तियाँ तोड़ दी गई, और मंदिरों को मस्जिद बना दिया गया। इस समय वहाँ जो मस्जिदें हैं, उनकी बनावट जैन मंदिरों के अनुरूप है। इस बात की पुष्टि जैम्सफग्रयूसन ने अपनी 'विश्व की दृष्टि' नामक प्रसिद्ध पुस्तक के पृष्ठ 26 पर की है। मध्यकाल में भी जैन दार्शनिकों के अनेक संघ बगदाद और मध्य एशिया गये थे, और वहाँ पर अहिंसा धर्म का प्रचार किया था।

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

यूनानियों के धार्मिक इतिहास से भी ज्ञात होता है, कि उनके देश में जैन सिद्धान्त प्रचलित थे। पाइथागोरस, पायरों, प्लोटीन आदि महापुरूष श्रमणधर्म और श्रमण दर्शन के मुख्य प्रतिपादक थे। एथेन्स में दिगम्बर जैन संत श्रमणाचार्य का चैत्य विद्यमान है, जिससे प्रकट है कि यूनान में जैनधर्म का व्यापक प्रसार था। प्रोफेसर रामस्वामी ने कहा था कि बौद्ध और जैन श्रमण अपने–अपने धर्मों के प्रचारार्थ यूनान रोमानिया और नार्वे तक गये थे। नार्वे के अनेक परिवार आज भी जैन धर्म का पालन करते हैं। आस्ट्रिया और हंगरी में भूकम्प के कारण भूमि में से बुडापेस्ट नगर के एक बगीचे से महावीर स्वामी की एक प्राचीन मूर्ति हस्तगत हुई थी। अतः यह स्वतः सिद्ध है कि वहाँ जैन श्रावकों की अच्छी बस्ती थी।

सीरियां में निर्जनवासी श्रमण सन्यासियों के संघ और आश्रम स्थापित थे। ईसा ने भी भारत आकर सन्यास और जैन तथा भारतीय दर्शनों का अध्ययन किया था। ईसा मसीह ने बाइबिल में जो अहिंसा का उपदेश दिया था, वह जैन संस्कृति और जैन सिद्धान्त के अनुरूप है।

ब्रह्मदेश (वर्मा) में जैनधर्म

शास्त्रों में ब्रह्मदेश को स्वर्णद्वीप कहा गया है। जनमत प्रसिद्ध जैनाचार्य कालकाचार्य और उसके शिष्य गया स्वर्णद्वीप में निवास करते थे, वहाँ से उन्होंने आसपास के दक्षिण–पूर्व एशिया के अनेक देशों में जैनधर्म का प्रचार किया था। थाइलैण्ड स्थित नागबुद्ध की नागफणवाली प्रतिमायें पाश्वनाथ की प्रतिमायें हैं। जैनधर्म ने ब्रह्मदेश (वर्मा) में अहिंसा व शांति को अपनाना सिखाया।

श्रीलंका में जैनधर्म

भारत और लंका (सिंहलद्वीप) के युगों पुराने सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। सिंहलद्वीप में प्राचीनकाल में जैनधर्म का प्रचार था। मंदिर, मठ, स्मारक विद्यमान थे, जो बाद में बौद्ध संघाराम बना लिये गये।

सम्पूर्ण सिंहलद्वीप के जन–जीवन पर जैन संस्कृति की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। जैन मुनि यशःकीर्ति ने ईसाकाल की प्रारम्भिक शताब्दियों में सिहलद्वीप जाकर जैनधर्म का प्रचार किया था। श्री लंका में जैन–श्रावकों और साधुओं के स्थान–स्थान पर चौबीसों जैन तीर्थकरों के भव्य मंदिर बनवाये। सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् फग्र्यूसन ने लिखा है कि कुछ यूरोपियन लोगों ने श्रीलंका में सात ओर तीन फणों वाली मूर्तियों के चित्र लिये। ये सात फण पाश्वनाथ की मूर्तियों पर और तीन फण उनके शासनदेव–धरणेन्द्र और शासनदेवी पद्मावती की मूर्ति पर बनाये जाते हैं। भारत के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्री पी.सी. राय चौधरी ने श्रीलंका में जैनधर्म के विषय में विस्तार से शोध–खोज की है।

तिब्बत देश में जैनधर्म

तिब्बत के हिमिन मठ में रूसी पर्यटक नोटोबिच ने पालीभाषा का एक ग्रंथ प्राप्त किया था, उसमें स्पष्ट लिखा है कि ''ईसा ने भारत तथा मौर्य देश जाकर वहाँ अज्ञातवास किया था, और वहाँ उन्होंने जैन–साधुओं के साथ साक्षात्कार किया था।'' हिमालय क्षेत्र के निवासित वर्तमान हिमरी जाति के पूर्वज तथा गढ़वाल और तराई के क्षेत्र में पूर्वज जैनों हेतु प्रयुक्त 'हिमरी' शब्द 'दिगम्बरी' शब्द का अपभ्रंशरूप है। जैन–तीर्थ अष्टापद (कैलाश पर्वत) हिम–प्रदेश के नाम से विख्यात है, जो हिमालय–पर्वत के बीच शिखरमाल में स्थित है, और तिब्बत में है, जहाँ आदिनाथ भगवान की निर्वाण भूमि है।

अफगानिस्तान में जैनधर्म

अफगानिस्तान प्राचीनकाल में भारत का भाग था, तथा अफगानिस्तान में सर्वत्र जैन साधु निवास करते थे। भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व संयुक्त महानिर्देशक श्री टी.एन. रामचन्द्रन अफगानिस्तान गये। उन्होंने एक शिष्टमंडल के नेता के रूप में यह मत व्यक्त किया था कि ''मैनें ई. छठी, सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के इस कथन का सत्यापन किया है, कि यहाँ जैन तीर्थकरों के अनुयायी बड़ी संख्या में हैं। उस समय एलेग्जेन्ड्रा में जैनधर्म और बौद्धधर्म का व्यापक प्रचार था।''

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

चीनी यात्री हवेनसांग 676–812 ईस्वी के यात्रा के विवरण के अनुसार कपिश देश में 10 जैन मंदिर हैं। वहाँ निग्रन्थ जैन मुनि भी धर्म प्रचारार्थ विहार करते हैं। 'काबुल' में भी जैनधर्म का प्रसार था। वहाँ जैन–प्रतिमायें उत्खनन में निकलती रहती हैं।

हिन्द्रेशिया, जावा, मलाया, कम्बोडिया आदि देशों में जैनधर्म

इन द्वीपों के सांस्कृतिक इतिहास और विकास में भारतीयों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन द्वीपों के प्रारम्भिक अप्रवासियों का अधिपति सुप्रसिद्ध जैन महापुरूष 'कौटिल्य' था, जिसका कि जैनधर्म–कथाओं में विस्तार से उल्लेख हुआ है। इन द्वीपों के भारतीय आदिवासी विशुद्ध शाकाहारी थे। इन देशों से प्राप्त मूर्तियाँ तीर्थंकर मूर्तियों से मिलती जुलती है। यहाँ पर चैत्यालय भी मिलते हैं, जिनका जैन परम्परा में बड़ा महत्व है।

नेपाल देश में जैनधर्म

नेपाल का जैनधर्म के साथ प्राचीनकाल से ही बड़ा संबंध रहा है। आचार्य भद्रबाहु वीर निर्वाण संवत् 280 में नेपाल गये थे और नेपाल की कन्दराओं में उन्होंने तपस्या की थी, जिससे सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र में जैनधर्म की बड़ी प्रभावना हुई थी।

नेपाल का प्राचीन इतिहास भी इस बात का साक्षी है। उस क्षेत्र की बद्रीनाथ, केदारनाथ एवं पशुपतिनाथ की मूर्तियाँ जैन मुद्रा 'पद्मासन' में है, और उन पर ऋषभ–प्रतिमा के अन्य चिन्ह भी विद्यमान हैं। नेपाल के राष्ट्रीय अभिलेखागार में अनेक जैन ग्रंथ उपलब्ध हैं, तथा पशुपतिनाथ के पवित्र क्षेत्र में जैन तीर्थकरों की अनेक मूर्तियाँ विद्यमान हैं। वर्तमान में संयुक्त जैन समाज द्वारा नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में एक विशाल जैन मंदिर का निर्माण किया जा चुका है। वर्तमान नेपाल में लगभग 500 परिवार जैनधर्म को मानने वाले हैं। यहाँ श्री उमेशचन्द जैन एवं श्री अनिल जैन आदि सामाजिक कार्यकर्ता हैं। जैन धर्म ने नेपाल में शांति के नए आयाम स्थापित किए।

भूटान में जैनधर्म

भूटान में जैनधर्म का खूब प्रसार था, तथा जैन मंदिर और जैन साधु–साध्वियाँ विद्यमान थे। विक्रम संवत् 2806 में दिगम्बर जैन तीर्थयात्री लागचीदास गोलालारे ब्रह्मचारी भूटान देश में जैन तीर्थयात्रा के लिए गया था, जिसके विस्तृत यात्रा विवरण की 208 प्रतियाँ भिन्न–भिन्न जैन शास्त्र भण्डारों (एक प्रति जैन शास्त्र भंडार, तिजारा राजस्थान) में सुरक्षित है।

पाकिस्तान की परवर्ती–क्षेत्रों में जैनधर्म

आदिनाथ स्वामी ने भरत को अयोध्या, बाहुबली को पोदनपुर तथा शेष 98 पुत्रों को अन्य देश प्रदान किये थे। बाहुबली ने बाद में अपने पुत्र महाबलि को पोदनपुर का राज्य सौंपकर मुनि दीक्षा ली थी। पोदनपुर वर्तमान पाकिस्तान क्षेत्र में विन्ध्यार्थ पर्वत के निकट सिंधु नदी के सुरम्य एवं रम्यक देश के उत्तरार्ध में था और जैन–संस्कृति का जगत विख्यात विश्व केन्द्र था। कालांतर में पोदनपुर अज्ञात कारणों से नष्ट हो गया।

तक्षशीला जनपद में जैनधर्म

तक्षशिला अति प्राचीनकाल में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था, तथा जैनधर्म के प्रचार का भी महत्वपूर्ण केन्द्र रहा। इस दृष्टि से प्राचीन जैन परम्परा से यह स्थान तीर्थस्थल सा हो गया था। सिंहपुर भी प्राचीन जैन प्रसार केन्द्र के रूप में विख्यात था। सम्राट हर्षवर्धन के काल में चीनी यात्री हवेनसांत ने यहाँ की यात्रा की थी, जिसने इस स्थान पर जगह जगह जैन श्रमणों का निवास बताया था।

सिंहपुर जैन महातीर्थ

यहाँ एक जैन स्तूप के पास जैन मंदिर और शिलालेख थे, यह जैन महातीर्थ 14वीं शताब्दी तक विद्यमान था। इस महाजैन तीर्थ का विध्वंस सम्भवतः सुल्तान सिकन्दर बुतशिकन ने किया था। डॉ0 बूहलर की प्रेरणा से डॉ. स्टॉइन ने सिंहपुर के जैन मंदिरों का पता लगाने पर कटाक्ष से दो मील की दूरी पर स्थित मूर्ति गांव में खुदाई से बहुत सी जैन मूर्तियाँ और जैन मंदिरों तथा स्तूपों के खण्डहर प्राप्त किये, जो 26 ऊँटों पर लादकर लाहौर लाये गये, और वहाँ के म्यूजियम में सुरक्षित किये गये।

ब्राह्मीदेवी मंदिर–एक जैन महातीर्थ

यह स्थान किसी समय श्रमण संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था। इस क्षेत्र में जैन साधुओं की यह परम्परा एक लम्बे समय से अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। 'कल्पसूत्र' के अनुसार भगवान ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी इस देश की महाराज्ञी थी, अंत में वह साध्वी–प्रमुख भी बनीं, और उसने तप किया।

मोअनजोदड़ों आदि की खुदाइयों में जो अनेकानेक सीलें प्राप्त हुई हैं, उन पर नग्न दिगम्बर मुद्रा में योगी अंकित हैं। मोअनजोदड़ों, हड़प्पा, कालीबंगा आदि 200 से अधिक स्थानों के उत्खन्न से जो सीलें, मूर्तियाँ एवं अन्य पुरातात्विक सामग्री प्राप्त हुई है, वह सब शाश्वत जैन परम्परा की द्योतक हैं।

कश्यपमेरु (कश्मीर जनपद) में जैनधर्म

कवि कल्हणकृत राजतरि गिरि के अनुसार कश्मीर अफगानिस्तान का राजा सत्यप्रतिज्ञ अशोक जैन था, जिसने और जिसके पुत्रों ने अनेक जैन मंदिरों का निर्माण कराया था, तथा जैनधर्म का व्यापक प्रसार किया।

हड़प्पा–परिक्षेत्र में जैनधर्म

इसके अतिरिक्त सक्खर मोअनजोदड़ों, हड़प्पा, कालीबंगा आदि की खुदाईयों से भी महत्वपूर्ण जैन पुरातत्व सामग्री प्राप्त हुई है, जिसमें बड़ी संख्या में जैन–मूर्तियाँ, प्राचीन सिक्के, बर्तन आदि विशेष ज्ञातव्य हैं।

गांधार और पुण्ड जनपद में जैनधर्म

सिंधु नदी के काबुल नदी तक का क्षेत्र मुल्तान और पेशावर गांधारमण्डल में सम्मिलित थे, पश्चिमी पंजाब और पूर्वी अफगानिस्तान भी इसमें सम्मिलित थे। गांधार जनपद में विहार करने वाले जैन साधु गांधार कच्छ के नाम से विख्यात थे। सम्पूर्ण जनपद जैनधर्म बहुल जनपद था।

बांग्लादेश एवं निकटवर्ती–क्षेत्रों में जैनधर्म

बांग्लादेश और उसके निकटवर्ती पूर्वी क्षेत्र और कामरूप जनपद में जैन संस्कृति का व्यापक प्रचार प्रसार रहा है, जिसके प्रचुर संकेत सम्पूर्ण वैदिक और परवर्ती साहित्य में उपलब्ध हैं।

आज इस कामरूप प्रदेश में जिसमें बिहार, उड़ीसा और बंगाल भी आते हैं, सर्वत्र गाँव–गाँव जिलों–जिलों में प्राचीन सराक जैन संस्कृति की व्यापक शोध खोज हो रही है, और नये नये तथ्य उद्घाटित हो रहे हैं।

पहाड़पुर (राजशाही बंगलादेश) में उपलब्ध 487 ईस्वी के ताम्रपत्र के अनुसार पहाड़पुर में एक जैन मंदिर था, जिसमें 5000 जैन मुनि, ध्यान अध्ययन करते थे, और जिसके ध्वंसावशेष चारों ओर बिखरे पड़े हैं। 'मैज्डवर्धन' और उसके समीपस्थ 'कोटिवर्ष' दोनों ही प्राचीनकाल में जैनधर्म के प्रमुख केन्द्र थे। श्रुतकेवली भद्रबाहु और आचार्य अहद्बलि दोनों ही आचार्य इसी नगर के निवासी थे। परिणामतः जैनधर्म बंगाल एवं उसके आसपास के क्षेत्रों में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। सम्भवतः प्रारम्भिक काल में बंगाल के लोकप्रिय बन जाने के कारण ही जैनधर्म इस प्रदेश के समुद्री तटवर्ती भू भागों से होता हुआ उत्कल प्रदेश के विभिन्न भू–भागों में भी अत्यंत शीघ्र गति से फैल गया।

विदेशों में जैन–साहित्य और कला–सामग्री

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 05 | October - December 2023

लंदन–स्थित अनेक पुस्तकालयों में भारतीय ग्रंथ विद्यमान हैं, जिनमें से एक पुस्तकालय में तो लगभग 2500 हस्तलिखित भारतीय ग्रंथ हैं। अधिकतर ग्रंथ प्राकृत, संस्कृत भाषाओं में हैं, और जैनधर्म से संबंधित हैं।

जर्मनी में भी बर्लिन स्थित एक पुस्तकालय में बड़ी संख्या में जैन ग्रंथ विद्यमान हैं, अमेरिका के बाशिंगटन और बोस्टन नगर में 500 से अधिक पुस्तकालय हैं, इनमें से एक पुस्तकालय में 40 लाख हस्तलिखित पुस्तकें हैं, जिनमें से 20000 पुस्तकें प्राकृत, संस्कृत भाषाओं में हैं, जो भारत से गई हुई हैं।

में 1100 से अधिक बड़े पुस्तकालय हैं, जिनमें पेरिस स्थित बिब्लियोथिक नामक पुस्तकालय में 40 लाख पुस्तकें हैं। उनमें 12 हजार पुस्तकें प्राकृत, संस्कृत भाषा की हैं, जिनमें जैन ग्रंथों का अच्छी संख्या है। रूस में एक राष्ट्रीय पुस्तकालय है, जिसमें 5 लाख पुस्तकें हैं। उनमें 22 हजार पुस्तकें प्राकृत, संस्कृत की हैं। इसमें जैन ग्रंथों की भी बड़ी संख्या है।

इटली के पुस्तकालयों में 60 हजार पुस्तकें तो प्राकृत, संस्कृत की हैं, और इसमें जैन पुस्तकें बड़ी संख्या में हैं। नेपाल के काठमाण्डू स्थित पुस्तकालयों में हजारों की संख्या में जैन प्राकृत और संस्कृत ग्रंथ विद्यमान हैं।

इसी प्रकार चीन, तिब्बत, वर्मा, इंडोनेशिया, जापान मंगोलिया, कोरिया, तुर्की, ईरान, अल्जीरिया, काबुल आदि के पुस्तकालयों में भी जैन–भारतीय ग्रंथ बड़ी संख्या में उपलब्ध है।

भारत से विदेशों में ग्रंथ ले जाने की प्रवृत्ति केवल अंग्रेजीकाल से ही प्रारम्भ नहीं हुई, अपितु इससे हजारों वर्ष पूर्व भी भारत की इस अमूल्य निधि को विदेशी लोग अपने अपने देशों में ले जाते रहे हैं। वे लोग भारत से कितने ग्रंथ ले गये, उनकी संख्या का सही अनुमान लगाना कठिन है। इसके अतिरिक्त म्लेच्छों, आततायियों, धर्मद्वेषियों ने हजारों, लाखों की संख्या में हमारे साहित्य रत्नों को जला दिया।

इसी प्रकार जैन मंदिरों, मूर्तियों, स्मारकों, स्तूपों आदि पर भी अत्याधिक अत्याचार हुये हैं। बड़े–बड़े जैन तीर्थ, मंदिर स्मारक आदि भंजकों ने धराशायी किये।

निष्कर्ष :

अन्त में यही निष्कर्ष निकलता है कि जैन धर्म ने सम्पूर्ण विश्व में शांति की संस्कृति को बढ़ावा दिया। आपस में प्रेम, सहिष्णुता, अहिंसा, सत्य व शुद्धता के साथ रहने की शिक्षा दी। उनका मानना है आज जो झगड़े अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हैं वे धार्मिक व वैचारिक मत के अनुसार है इसलिए उनको खत्म किया जाना चाहिए। उन्होंने युद्ध, परमाणु युद्ध जैसी स्थिति से बचने के लिए अलग–अलग देशों में शांति का प्रचार किया तथा निशस्त्रीकरण में जैन धर्म के लोग अपना बड़ा हाथ मानते हैं।

Reference

1. Bhargave, Dayanand : Jaiva Ethics, Delhi 1968.
2. Bool Chand : Lord Mahavira, Banaras 1948.
3. Gopal, S. : Outlines of Jainism, New Delhi, 1973
4. Jacobi H, Studies in Jainism, Ahmedabad 1946.
5. Jain, Jyoti Prasad : Jainism : The Oldest living religion, Banaras, 1951.
6. Jain, Jyoti Prasad : Religion and Culture of the Jains, New Delhi, 1977.
7. Mehata M.L. Jaina Culture, Varanasi, 1969.
8. Winternitz M. : The Jaines in the History of Indian Literature, Ahmedabad, 1946.